मां चिन्तपुरनी चालीसा

॥ दोहा॥

छिन्नमस्तिका मां मेरी, वंदन करो स्वीकार
चिन्ता हर लो दास की, दे संतोष धन अपार
मङ्गल करो सर्वमङ्गला, हे मां क्रिपानिधान
दीन, हीन हूं शरण में, करो सर्व विधि कल्याण ॥

****

॥ चौपाई ॥

नमो नमो सुखकरनी माता
भाग्य संवारो भाग्यविधाता ॥ १॥
जय जय जय मां चिन्तापुरनी
विघ्न विनाशक मां सुखकरनी ॥ २ ॥
पूजन आपका परम फलदायक
ऋधी सिद्धी व सुखदायक ॥ ३ ॥
मनमन्दिर में करो बसेरा
हर पल पाऊं मां दर्शन तेरा ॥ ४ ॥
मम्तामयी आंचल ओढ़ाना
रोग संताप मां दूर भगाना ॥ ५ ॥
चौसठ योगिनी मङ्गल गावे
स्तुतिगान कर शीश निवावे ॥ ६ ॥

तुम्हरी महिमा अगम अपारा
शीश निवाये जगत है सारा ॥ ७ ॥
एकाग्रचित्त जो होय समर्पित
सब सुख करती, मां हो अर्पित ॥ ८ ॥
कर में खप्पर, खण्डे वाली
आप सा न कोई, मां बलशाली ॥ ९ ॥
अपनी दया बनाये रखना
सेवाभाव जगाये रखना ॥ १० ॥
भक्ति में मन-चित्त लगाऊं
मुक्ति की युक्ति यूं पाऊं ॥ ११ ॥
भगतन पे हो दया की सागर
भर देना मां ज्ञान की गागर ॥ १२ ॥
अवगुण पे मां ध्यान न धरना
असंभव को भी संभव करना ॥ १३ ॥
मैं याचक तू सुख प्रदायिनी
कल्याण करो मां हे कल्याणी ॥ १४ ॥
जगजननी मां पालनकरनी
दया द्रिष्टी सदा ही करनी ॥ १५ ॥
हरो अमङ्गल मङ्गल कर दो
वर्दानों की मां वर्षा कर दो ॥ १६ ॥
संतोष का दीजो मोहे दान मां
बल-बुद्धी मैं पाऊं ज्ञान मां ॥ १७ ॥
दिव्य आलौकिक रूप तिहारा
भव सागर से तारनहारा ॥ १८ ॥
सौभग्या, आरोग्या दान में देना
सुख-सुविधा वर्दान में देना ॥ १९ ॥
दानव दलिनी, भयमोचिनी
हे दुःखभंजन, पिण्डी रूपिणी ॥ २० ॥
आपके हाथ मेरे लाभ व हानी
कल्याण करो मां हे कल्याणी ॥ २१ ॥

हाथ जोड़ कर करूं मैं वंदन
जीवन मैं हो मां कभी न क्रंदन ॥ २२ ॥
विनती पे सदा ध्यान मां धर्ना
कारज सकल संपूर्ण कर्ना ॥ २३ ॥
आप की क्रिपा जो है पाता
निर्बल से वह सबल हो जाता ॥ २४ ॥
पिण्डी रूपिणी, भय नाशिनी
हरो मां चिन्ता, पर्वत वासिनी ॥ २५ ॥
सुमिरिन करे भाव से जोई
जन्म मरण से छूटे सोई ॥ २६ ॥
आप तो नाना रूप धारिणी
दैत्या दलिनी मां भय संहारिणी ॥ २७ ॥
भगतन पे मां जब हर्षाती
यश, कीर्ति मां फैलाती ॥ २८ ॥
जब हो विपद ने मुझको घेरा
चिंतामुक्त करो मन मेरा ॥ २९ ॥
निर्मल मन जो करे पर्णाम
सुख-सुविधा का देती हो दान ॥ ३० ॥
माई दास मां शरण मैं आया
मान-सम्मान व वैभव पाया ॥ ३१ ॥
श्रद्धा सहित जो नाम ध्यावै
पाप संताप निकट नहीं आवै ॥ ३२ ॥
याद करूं, तब ही मां आना
संकट मोचन, मां बन जाना ॥ ३३ ॥
विनती पे मेरी ध्यान मां धर्ना
हर विधि काज संपूर्ण करना ॥ ३४ ॥
सर्व सुखों की आप तो दाता
दुष्ट आप से भय को पाता ॥ ३५ ॥
दुविधा में सुविधा बन जाती
आपकी दया है सुख प्रदाती ॥ ३६ ॥

श्रद्धा सहित जो पूजन करते
दुःख दरिद्र तन से झरते ॥ ३७ ॥
असंभव को मां संभव करती
वर्दानों से मां झोली भरती ॥ ३८ ॥
पढ़ै चालीसा जो चित्त लाय
परम सौभग्या, नवनिधि पाय ॥ ३९ ॥
बुरी आत्मा नहीं है सताती
“शौंकी” कवच है मां बन जाती ॥ ४० ॥
****

॥ दोहा ॥

पिण्डी रूपिणी मां मेरी, सर्वकला संपन्न
शरणागत हूं द्वार पे, होना मां प्रसन्न ॥
****